याकूब^(अ.स) और उनके खानदान वाले मिस्र में फले-फूले

तौरत : खिल्कत 46:29-30; 47:5-6, 27; 48:1, 8-11, 21; 49:33; 50:22-24

46:29-30

जब यूसुफ^(अ.स) को पता चला कि उनके वालिद मिस्र आ रहे हैं, तो उन्होंने अपनी सवारी को तैयार किया और उनसे मिलने के लिए रवाना हो गए। यूसुफ^(अ.स) अपने वालिद से मिस्र के एक शहर गोशेन में मिले। जब यूसुफ^(अ.स) ने अपने वालिद को देखा तो उन्होंने उनको गले लगाया और काफ़ी देर तक रोते रहे।⁽²⁹⁾ तब याकूब^(अ.स) ने कहा, “अब मैं सुकून से मर सकता हूँ क्योंकि मैंने अब तुम्हारा चेहरा देख लिया है और मैं जान गया हूँ कि तुम जिंदा हो।”⁽³⁰⁾

47:5-6, 27

तब फ़िरौन, मिस्र के बादशाह, ने यूसुफ^(अ.स) से कहा, “तुम्हारे वालिद और तुम्हारे भाई तुम्हारे पास आ गए हैं⁽⁵⁾ तो तुम मिस्र में कोई भी जगह उनके रहने के लिए चुन सकते हो। अपने वालिद और अपने भाइयों को सबसे अच्छी ज़मीन दो। उनको गोशेन में रहने दो और अगर वो एक अच्छे चरवाहे हैं तो मेरी गायों की देखभाल भी कर सकते हैं।”⁽⁶⁾

याकूब^(अ.स) मिस्र में गोशेन की ज़मीन पर रहे उनका खानदान बहुत फला-फूला। वो लोग वहाँ ज़मींदार बन गए और बहुत बेहतरीन ज़िन्दगी गुजारी।⁽²⁷⁾

48:1, 8-11, 21; 49:33

कुछ वक़्त के बाद यूसुफ^(अ.स) को पता चला कि उनके वालिद, याकूब^(अ.स), की तबियत खराब है। वो अपने दोनों बेटों को ले कर उनसे मिलने गए।⁽¹⁾

जब याकूब^(अ.स) ने यूसुफ^(अ.स) के बेटों को देखा तो पूछा “ये बच्चे कौन हैं?”⁽⁸⁾ यूसुफ^(अ.स) ने कहा, “ये मेरे बेटे हैं, ये वो लड़के हैं जो अल्लाह ताअला ने मुझे अता किये हैं।” याकूब^(अ.स) ने कहा, “अपने बेटों को मेरे पास ले कर आओ ताकि मैं इन्हें बरकत दे सकूँ।”⁽⁹⁾ याकूब^(अ.स) बहुत बुजुर्ग हो चुके थे और उनकी नज़र भी बहुत कमज़ोर हो गई थी। यूसुफ^(अ.स) लड़कों को वालिद के करीब लाए तो उन्होंने लड़कों को प्यार किया और गले लगाया।⁽¹⁰⁾ तब याकूब^(अ.स) ने यूसुफ^(अ.स) से कहा “मुझे नहीं लगता था कि मैं अब कभी तुम्हें देख पाऊँगा, लेकिन देखो अल्लाह रब्बुल करीम ने मुझे तुमसे और तुम्हारे बच्चों से मिला दिया।”⁽¹¹⁾

तब याकूब^(अ.स) ने यूसुफ^(अ.स) से कहा, “देखो मेरे मरने का वक़्त बहुत करीब है, लेकिन अल्लाह ताअला तुम्हारे साथ है और वो तुमको तुम्हारी पुरखों की ज़मीन तक ले कर जाएगा।”⁽²¹⁾

जब याकूब^(अ.स) अपने बेटों से बात कर चुके तो वापस अपने बिस्तर पर लेटे और इत्तिकाल फ़रमा गए।⁽³³⁾

50:22-24

यूसुफ^(अ.स) अपने वालिद के घर वालों के साथ मिस्र में ही रहे और एक सौ दस साल की उम्र में इत्तिकाल फ़रमाया।⁽²²⁾ यूसुफ^(अ.स) की ज़िन्दगी में उनके बेटे इफ़्राईम के बच्चे हुए और पोते हुए, और उनके बेटे मनस्सा के एक बेटा हुआ जिसका नाम मक्किया था। यूसुफ^(अ.स) ने अपनी ज़िन्दगी में मक्किया के बच्चों को भी देखा।⁽²³⁾ जब यूसुफ^(अ.स) अपने आखिरी वक़्त में पहुंचे तो उन्होंने अपने भाइयों से कहा, “मेरे मरने का वक़्त बहुत करीब है लेकिन मैं जानता हूँ कि अल्लाह रब्बुल करीम तुम्हारा ख्याल रखेगा और तुमको इस मुल्क से निकाल कर उस ज़मीन पर ले कर जाएगा कि जिसका वादा उसने इब्राहीम^(अ.स), इस्हाक^(अ.स), और याकूब^(अ.स) से किया है।”⁽²⁴⁾